Click www.researchjournal.co.in/online/subdetail.html to purchase.

International Journal of Physical Education, Vol. 2 No. 1&2 : 22-24 (April & October, 2009)

A Case Study :

ek'ky dykvk e dk'ky d fy, ;kx

ALOK KUMAR MISHRA

Accepted : ***July, 2009***

Correspondence to:
ALOK KUMAR MISHRA
Department of Physical Education, Barkatullah University, BHOPAL (M.P.) INDIA

Key words :

यद्यपि आज पूरी दुनिया में योग की चर्चा शरीर को निरोगी रखने के अर्थ में जोर–शोर से हो रही है, लेकिन अब यह भी सर्वमान्य तथ्य है कि जो भी जिस क्षेत्र में है उसे यहाँ अपने कार्य को श्रेष्ठतम कुशलता से करने में जो विद्या सक्षम व कुशल बनाती है वह योग ही है। यह विश्व को भारत की ऐसी विरासत है, जिससे जो चाहो, सब कुछ अर्जित किया जा सकता है। और जो चाहो, सब कुछ जाना जा सकता है। यहां तक कि इससे ईश्वर तक की प्राप्ति संभव हैं । पूरे विश्व में भारतीय योग की यही पहचान रही है। विख्यात आक्सफोर्ड डिक्शनरी ने योग को हिन्दुओ की दार्शनिक ध्यान एवं समाधि की ऐसी प्रक्रिया बताया है। जिसका निर्माण साधक की आत्मा के परामात्मा से मिलन के उददेश्य से किया गया है। अर्थात् योग वह साधना प्रक्रिया है जिससे जीवात्मा का परमात्मा से मिलन होता है।

लेकिन बहुत कम लोग जानते है कि आधुनिक मार्शल कलाओं के जन्म और विकास में भी योग की आधारभूत भुमिका रही है। क्योंकि इस तथ्य को भी बहुत कम लोग जानते है कि आज पूरी दुनिया में जूडो, कराटे, कुंगफू ताइक्वांडो आदि जिन मार्शल कलाओ की धूम है उनके जन्म और विकास में भारत से चीन गये अहिंसा के पुजारी उन बौद्ध भिक्षुओं की भी आधाारभूत भूमिका रही जो क्षत्रिय से बौद्ध बने थे और नियुद्ध कला के जानकार थे, जिनका आधार योग रहा है।

वस्तुतः यह विचित्र यथार्थ है –कहाँ योग और कहाँ मार्शल कलाएं अथवा कहां अहिंसा और कहा मार्शल कलाएं। दोनो का कोई तालमेल नजर नही आता, लेकिन यह ऐसा यथार्थ है जिस पर भारतवासी गर्व भी कर सकते है और प्रेरणा भी ले सकते है। दुःखी मानव कें लिए असीम सान्त्वना व संतोष का मंत्र अहिंसा का सन्देश लेकर जो बौद्ध भिक्षु चीन गये उन्होने वहाँ यह चमत्कार कर दिखाया। चीन, जापान, इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, फिलीपीन्स कोरिया आदि पूर्वी देशों की राजा प्रजा इन बौद्ध भिक्षुओं के सामने नत मस्तक हो गयी तो इसका कारण यह नही था कि इन देशों के राजा प्रजा इन भगवा कोपीन धारी बौद्ध भिक्षुओ की दया, ममता, करूणा और सादगी से प्रभावित थी, बल्कि वास्तविकता कुछ और है। मार्शल कलाओं के महारथी श्रद्धा पूर्वक स्मरण करते है उन बौद्ध भिक्षुओ का जिन्होने चीन सहित पूर्वी देशों को उत्पीडित त्रस्त और दलित आम जन को मार्शल कलाओं में ऐसा प्रवीण किया कि वे निहत्थे ही अपने उत्पीडन सामंतों और उनके युद्ध कला पारंगत शस्त्र धारी सैनिको केा धूल चटाने लगे। उनके सामने उस जमाने के चीन के सर्वश्रेष्ठ विद्वान नत मस्तक हुए तो वहां के श्रेष्ठतम शस्त्रधारी योद्धा बिना हथियार के या यूं कहें कि शरीर के अंग ही जिनके बज्र जैसे हथियार बन गये थे, ऐसे बौद्ध भिक्षुओं के सामने लकड़ी के खिलौनों की तरह बिखर जाते थे।

शाओलिन बौद्ध मठ–पूरे विश्व के मार्शलकला विशारद एक स्वर से चीन के शुंगशान पर्वत माला की उपत्यका में त(ग फेंग जिले के उत्तर पश्चिम में) स्थित शाओलिन बौद्ध मठ को मार्शल कलाओं की जन्मस्थली मानते हैं। वैसे बौद्धधर्म चीन में दूसरी शताब्दी में ही पहुँच गया था और भारत के समान वहां भी आगे चार शताब्दियों तक सजाश्रय में रहा। सन् 495 ई. में चीन के वेई वश के सम्राट झियाओं वेन ने विश्वविख्यात शाओलिन बौद्धमठ का निर्माण प्रारंभ कराया। मार्शल कला के विख्यात स्तंभकार ब्लेने एस. कोलिंस ने गहन शोध के आधार पर बताया है कि उस समय शाओलिन मठ के प्रमुख भारत से गये बौद्ध भिक्षु बटुओ (BATUO) थे। भारत में बौद्ध धर्मचक्र के 27 वे प्रमुख प्रज्ञातारा थे। उन तक यह समाचार पहुंचा कि चीन में बटुओ बौद्ध का भ्रामक प्रचार कर रहा है। वह तंत्र–मंत्र और संस्कृत, पाली, प्राकृत की बौद्ध पुस्तकों के चीनी भाषा में अनुवाद पर ही अपनी सारी शक्ति केन्द्रित किये हुए है। जिनका निर्वाण प्राप्ति या मोक्ष से कोई सम्बन्ध नहीं है। उन्होंने मृत्युशय्या पर अपने उत्तराधिकारी बोधिधर्मा (चीनी नाम त मो) को चीन जाने और वहां बौद्ध धर्म के भ्रामक प्रचार